ग्रामीण समाजशास्त्र, प्रश्नपत्र - VI
बी॰ए॰ (प्रतिष्ठा), खण्ड - III

ग्रामीण समाजशास्त्र (Rural Sociology) की परिभाषा एवं अर्थ — मानव व्यवहार का अध्ययन करनेवाले विज्ञानों में समाजशास्त्र अपेक्षाकृत नवीन विज्ञान है। मानव व्यवहार जटिलताओं एवं विभिन्नताओं से परिपूर्ण है। मनुष्य के व्यवहार एवं सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने के लिए समाजशास्त्र में भी अनेक विशिष्ट शाखाओं का उदय हुआ है। ग्रामीण समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की एक विशिष्ट शाखा है जो मानव के ग्रामीण जीवन का सर्वांगीण अध्ययन करती है। विश्व की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीणों का व्यवहार और जीवन नगरीय क्षेत्रों में निवास करनेवालों से भिन्न है तथा उनका व्यवहार जीवन विधि एवं विश्वास ग्रामीण पर्यावरण से काफी प्रभावित है। इसलिए ही उनका अध्ययन करने के लिए समाजशास्त्र की एक विशिष्ट शाखा के रूप में ग्रामीण समाजशास्त्र का उदय हुआ।

वर्तमान में ग्रामीण समाजशास्त्र का उदय आवश्यकता की ही देन है। चार्ल्स होमर कहता है कि "ग्रामीण समाजशास्त्र अन्य सभी विज्ञानों के समान किसी आवश्यकता के परिणामस्वरूप विकसित हुआ है। वैज्ञानिक विचारों के क्षेत्र में यह एक मूल तथ्य है कि जब कभी मानव मस्तिष्क को विचलित कर देनेवाली घटनाओं का वर्तमान विज्ञानों अथवा पद्धतियों द्वारा सन्तोषप्रद अध्ययन नहीं किया जाता, उसी समय कोई न कोई विज्ञान प्रकाश में आता है।" यही बात हम ग्रामीण समाजशास्त्र के बारे में भी कह सकते हैं।

यदि हम इस विज्ञान की शब्द रचना पर ध्यान दें तो ज्ञात होगा कि यह दो शब्दों 'ग्राम' और 'समाजशास्त्र' से मिलकर

बना है, जिसका अर्थ हुआ समाजशास्त्र भी वह शाखा जो ग्रामीण जीवन, ग्रामीण समूहों, ग्रामीण संबंधों एवं ग्रामीण जगत का वैज्ञानिक अध्ययन करती है। विभिन्न विद्वानों ने ग्रामीण समाजशास्त्र की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है:-

ए० आर० देसाई ने अपनी पुस्तक "Rural Sociology in India" में लिखा है कि "ग्रामीण समाजशास्त्र का मूल कार्य ग्रामीण समाज के विकास के नियमों की खोज निकालना है।"

जे० बी० चिताम्बर के अनुसार, "ग्रामीण समाजशास्त्र को ग्रामीण ~~जीवन~~ मानव और उसकी समूहों के साथ अन्तः क्रिया का अध्ययन करनेवाले विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

सैण्डरसन के अनुसार, "ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण पर्यावरण में निहित जीवन का समाजशास्त्र है।"

लॉरी नेल्सन ने लिखा है, ~~कि~~ "ग्रामीण समाजशास्त्र की विषय-सामग्री विभिन्न प्रकार के समूह जैसे कि वे ग्रामीण पर्यावरण में पाये जाते हैं, का विवेचन एवं विश्लेषण है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि ग्रामीण समाजशास्त्र के बारे निम्नांकित तथ्य एवं निष्कर्ष प्रकट होते हैं:-

(i) ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण पर्यावरण में मानवीय संबंधों का अध्ययन करता है।

(ii) ग्रामीण समाजशास्त्र के अंतर्गत ग्रामीण समूहों, ग्रामीण सामाजिक प्रक्रियाओं एवं अंतःक्रियाओं, ग्रामीण सामाजिक संरचना एवं संगठन आदि का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है।

(iii) ग्रामीण समाजशास्त्र सम्पूर्ण ग्रामीण जीवन का ही विज्ञान है।

(iv) यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं बल्कि ग्रामीण समा निर्माण, ग्रामीण पुनर्निर्माण और उत्थान में योगदा देने ~~बाबा~~ वाला विज्ञान है।

—x—